



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 12 बुलेटिन अवधि: 11-15 फरवरी 2017 दिन: शुक्रवार दिनांक: 10 फरवरी, 2017

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	11-02-2017	12-02-2017	13-02-2017	14-02-2017	15-02-2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	25	25	24	24
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	04	05	05	06	06
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	बादल	आंशिक बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	008	006	008	010
वायु की दिशा	उत्तर-उत्तर-पूर्व	पूर्व-दक्षिण-पूर्व	उत्तर-पूर्व	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (03 से 09 फरवरी 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में बादल छाये रहे तथा 00.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 22.5 से 24.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 7.7 से 11.9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 88 से 95 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 40 से 66 प्रतिशत एवं हवा 1.5 से 8.5 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम-उत्तर-पश्चिम व पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ नौलख गन्ना की कटाई 15 फरवरी से पहले न करें।
- ❖ बिलम्ब से बोई गेहूँ की फसल जिसे दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े में लगाया गया है, में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु बुवाई के 40-45 दिन बाद 2, 4-डी की 80 प्रतिशत शुद्धता वाली दवा के 625 ग्राम/हेक्टेयर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव प्लैट फैन नाजल लगग स्प्रेयर द्वारा करें। अगर यूरिया की टापड्रेसिंग नहीं गई हो तो इसे खरपतवारनाशी के छिड़काव से 2-3 दिन पहले की पूरा कर लेना चाहिए।
- ❖ गेहूँ में पीली गेरुई के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ जाती है। खेत में पत्तियों को छूने से पीला रंग हाथ में लगे तो रोग के लक्षण दिखाई देते ही प्रोपीकोनाजाल 25 ई0 जो टिल्ट यदि के व्यवसायिक नाम से बाजार में उपलब्ध है के 500 मि0ली0 हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ मेंथा की बुवाई 15-20 फरवरी तक कर सकते हैं। उन्नतशील किस्मों- कोशी, सक्षम, कुशल, हिमालय, सरयू एवं संगंध पौध संस्थान के पन्तनगर प्रक्षेत्र से प्राप्त कर सकते हैं। 400-500 कि0ग्रा0 जड़/हैक्टर की आवश्यकता होती है। बुवाई से पूर्व जड़ों को 5-7 से0मी0 लम्बे टुकड़ों जिसमें 3-4 गांठे हो में काटते हैं। इसके उपरान्त 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में घोल कर इसमें 5 मिनट तक डुबोकर शोधित करते हैं। इसके बाद जड़ टुकड़ों को घोल से निकाल कर आधे घण्टे तक छायादार स्थान में सुखा कर बुवाई करते हैं।
- ❖ सरसों में पत्ति झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ चना में फलीबेधक के नियंत्रण के लिए क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 125 मि0ली0/है0 या इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस0जी0, 220ग्राम/है0 या नोवाल्थूरान 10 ई0सी0, 750 मि0ली0/है0 या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 ई0सी0, 500मि0ली0/है0 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ में यदि माहू का प्रकोप हो तो थायोमेथाक्जाम 25 डब्लूएस0जी0 50ग्राम/है0 या क्यूनॉलफास 25 ई0सी0 एक लीटर/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ की फसल में पीला रतवा रोग का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ सरसों में माहुं का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50-100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ खर्रा रोग संक्रमण अगर दिखाई पड़े तो निदान हेतु 0.2 प्रतिशत घुलनशील गंधक (2ग्राम/लीटर) का प्रथम छिड़काव करें।
- ❖ आम फल पेड़ों में भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु ऐमिडाक्लोरपिड 17.8 एस0एल0 का 0.03 मि0ली0/लीटर की दर से प्रथम छिड़काव पुष्पगुच्छ की शुरुआत में करें। फल की मटर अवस्था पर थियामैथोक्जैम से दूसरा छिड़काव 0.32 ग्राम/लीटर और तीसरा छिड़काव केवल आवश्यकता पड़ने पर दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद एन0एस0के0ई0 5 प्रतिशत का 5 मि0ली0/लीटर की दर से करें।
- ❖ लहसुन में यदि ऊपर से पत्तियाँ पीली पड़ रही हो तो नियंत्रण हेतु डिफिनोकोनाजोल का 1 मि0ली0/लीटर के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में पछेती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्त्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।

- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि०ली०/है० या फिप्रोनिल 5 एस०सी० 1लीटर/है० की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू०पी० 600ग्रा०/है०या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि०ली०/है० की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- ❖ प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि०ली०/है० की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव के 20 दिन बाद फल का उपयोग करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें। सरद ऋतु में बिछावन की मोटाई बढ़ा दे जिससे कुक्कुट को पर्याप्त गर्मी मिलती रहे।
- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी०सी० नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी०सी० नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा० आर० के० सिंह
 प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
 ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
 गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर